SHRI JAIRAM RAMESH (Andhra Pradesh): Sir, I also associate myself with this Special Mention.

**Demand to keep CSD canteens out of the purview of VAT**

**श्री कृपाल परमार** ( हिमाचल प्रदेश) : सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान रक्षा सेनाओं में सेवारत, फौजी अधिकारियों एवं जवानों की ओर दिलाना चाहता हूं और निवेदन करना चाहता हूं कि देश में मूल्य आधारित कर (वैल्यू एडेड टैक्स) की नई व्यवस्था शुरू होने से, देश भर में सी.एस.डी. और यूनिटों द्वारा चलाई जा रही लगभग 3,500 कैंटीनों से मिलने वाली वस्तुओं, जैसे ग्रौसरी एवं लिकर के मूल्यों में वृद्धि हो गई। इससे देशभर में सेवारत एवं सेवा निवृत्त लगभग 4.5 लाख फौजियों पर बुरा असर पड़ रहा है और अब उन्हें अपनी रोजमर्रा की चीजें महंगे दामों पर कैंटीनों से खरीदनी पड़ रही हैं।

महोदय, जो टूथपेस्ट पहले 30 रुपए का मिलता था, अब वैट लागू होने के बाद, 34 रुपए 50 पैसे का हो गया है। इसी प्रकार जो सूटकेस पहले 1,650 रुपए का मिलता था, अब वही 1,895 रुपए का हो गया है। इसी प्रकार कंट्री मेड फ़ॉरेन लिकर के दामों में भी, 30 से 60 रुपए प्रति बोतल की बढ़ोत्तरी हो गई है, जो सिविल रेट के बराबर है। अनुमानत: 4 प्रतिशत से 13 प्रतिशत की वृद्धि, कैंटीन से मिलने वाली वस्तुओं में हो गई है।

महोदय, सशस्त्र सेनाएं देश की सीमाओं की रक्षा में, प्राणपन से जुटी हैं और उन्हें हर प्रकार की सुविधा एवं उनके रोजाना के उपयोग की वस्तुएं कम कीमत पर उपलब्ध कराना, भारत सरकार का परम कर्तव्य है। जब से सी.एस.डी. कैंटीनें चल रही हैं, तब से फौजियों के लिए उपलब्ध कराए जाने वाले सामान की कीमतों में, पहली बार इतनी भारी वृद्धि की गई है। सरकार द्वारा इस प्रकार की वृद्धि किया जाना, उनके साथ सरासर अन्याय है।

मेरा रक्षा मंत्री, वित्त मंत्री और माननीय प्रधान मंत्री से आग्रह है कि वे तत्काल इस ओर ध्यान दें और सी.एस.डी. कैंटीनों तथा यूनिटों द्वारा चलाई जा रही कैंटीनों को वैल्यू एडेड टैक्स के प्रावधानों से मुक्त किया जाए।

**श्री अजय मारू** (झारखंड) : महोदय, मैं अपने आपको इस विशेष उल्लेख के साथ सम्बद्ध करता हूं।

MR. CHAIRMAN: Shri P.G. Narayanan, not here; Shrimati Syeda Anwara Taimur, not here. Shri B.K. Hariprasad.

**Need to improve punctuality in Indian Airlines flights**

SHRI B.K. HARIPRASAD (Karnataka): Sir, sheer sense of loyalty to nation's enterprise prompts me every time to patronise the Indian Airlines for all my journeys, but the national carrier seems to take this loyalty for granted. Despite a larger fleet, manpower and dedicated ground facilities, the Indian Airlines is losing out to private carriers.